पाठ - 1

सावित्री

बहुत प्राचीन युग की बात है, भारतवर्ष के मद्र देश में (जो आजकल दक्षिणी कश्मीर है) अश्वपति नाम के राजा राज्य करते थे। वह बहुत धर्मात्मा, न्यायकारी और दयालु राजा थे। इनके कोई सन्तान न थी। ज्यों-ज्यों अवस्था बीतती गयी इन्हें संतान न होने से चिन्ता हुई। ज्योतिषियों ने इनकी जन्मकुण्डली देखकर बताया कि आपके ग्रह बता रहे हैं कि आपके सन्तान होगी, इसके लिए आप सावित्री देवी की पूजा कीजिए। राजा अश्वपति राज्य छोड़कर वन चले गये। अट्ठारह वर्ष तक उन्होंने तपस्या की, तब उन्हें वरदान मिला और कन्या हुई। उसका नाम उन्होंने सावित्री रखा।

सावित्री अद्वितीय सुन्दरी थी। उसकी सुन्दरता और गुण की प्रशंसा दूर-दूर तक फैलने लगी। ज्यों-ज्यों सावित्री बढ़ने लगी त्यों-त्यों उसका रूप निखरने लगा। पिता को उसके विवाह की भी चिन्ता होने लगी। अश्वपति चाहते थे कि उसी के अनुरूप पति भी मिले, किन्तु कोई मिलता न था।

सावित्री का चित्त बहलाने के लिए अश्वपति ने उसे तीर्थ-यात्रा के लिए भेज दिया और उसे आज्ञा दी कि तुझे वर चुन लेने की स्वतन्त्रता देता हूँ। सावित्री का रथ जा रहा था कि उसे एक अद्भुत स्थान दिखायी दिया। अनेक सुन्दर वृक्ष थे, चारों ओर हरियाली थी। वहीं एक युवक घोड़े के बच्चे के साथ खेल रहा था। उसके सिर पर जटा बँधी थी। छाल पहने हुए था। मुख पर तेज था। सावित्री ने देखा और मन्त्री से कहा कि आज यहीं विश्राम करना चाहिए। रथ जब ठहरा, वह युवक परिचय पाने के लिए उनके पास आया। उसे जब पता लगा कि वह राजकुमारी है, बड़े सम्मान से अपने पिता के आश्रम में ले गया। उसने यह भी बताया कि मेरे माता-पिता दृष्टिहीन हैं। मेरे पिता किसी समय शाल्व देश के राजा थे। वह इस समय यहाँ तपस्या कर रहे हैं। मेरा नाम सत्यवान है।

दूसरे दिन सावित्री घर लौट गयी। बड़ी लज्जा तथा शालीनता से उसने सत्यवान से विवाह करने की अनुमति माँगी। अश्वपति इससे बहुत प्रसन्न हुए कि सावित्री को उसके अनुरूप वर मिल गया, किन्तु बाद में पता चला कि सत्यवान की आयु बहुत कम है, वह एक साल से अधिक जीवित नहीं रहेगा। इससे सावित्री के पिता को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने सावित्री

को सब प्रकार समझाया कि ऐसा विवाह करना जन्म भर के लिए दुःख मोल लेना है। सावित्री ने कहा, ''पिताजी, मुझे इस सम्बन्ध में आपसे कुछ कहते संकोच तथा लज्जा का अनुभव हो रहा है। मैं विनम्रता के साथ यह निवेदन करना चाहती हूँ कि आपने मुझे वर चुनने की स्वतन्त्रता दी थी। मैंने सत्यवान को चुन लिया। उससे हटना आदर्श से हटना होगा और युग-युग के लिए अपने तथा अपने परिवार के ऊपर कलंक लगाना होगा।''

अश्वपति निरुत्तर हो गए। उन्होंने विद्वानों को बुलाकर विचार किया। अन्त मंे राजा अश्वपति सावित्री को तथा और लोगों को साथ लेकर सत्यवान के पिता के आश्रम में विवाह करने के लिए चले। जब आश्रम निकट आया तब सबको छोड़कर आश्रम में गए और सत्यवान के पिता द्युमत्सेन से सावित्री का सत्यवान के साथ विवाह करने का विचार प्रकट किया। द्युमत्सेन ने पहले तो अस्वीकार कर दिया।

वह बोले, ''महाराज, मैं दरिद्र हूँ। तपस्या कर रहा हूँ, यद्यपि किसी समय राजा था, किन्तु अब तो कंगाल हूँ। राजकुमारी को किस प्रकार अपने यहाँ रख सकूँगा ?''

अश्वपति ने उन्हें सारी स्थिति बता दी और विवाह कर लेने के लिए आग्रह किया। अन्त मंे सत्यवान के पिता मान गये और वहीं वन में दोनों का विवाह हो गया। अश्वपति बहुत-सा धन, अलंकार आदि दे रहे थे। द्युमत्सेन ने कुछ भी नहीं लिया। उन्होंने कहा, ''मुझे इनसे क्या काम ?''

सावित्री यमराज से अपने पति के प्राण माँग रही हैं

विवाह के पश्चात् सावित्री वहीं आश्रम में रहने लगी। उसने अपने सास-ससुर तथा पति सत्यवान की सेवा में अपना मन लगा दिया। सत्यवान और सावित्री सदा लोक- कल्याण

तथा उपकार की बात करते थे।
सावित्री दिन भर घर का काम-काज करती थी। जब उसे अवकाश मिलता था वह भगवान से बड़ी लगन के साथ प्रार्थना करती थी कि मेरा पति दीर्घायु हो। ज्यों-ज्यों समय निकट आता गया उसकी चिन्ता बढ़ती गयी। जब सत्यवान के जीवन के तीन दिन शेष रह गये, सावित्री ने भोजन भी छोड़ दिया और दिन-रात प्रार्थना करने लगी। लोग उसे भोजन करने के लिए समझाते किन्तु वह सबका अनुरोध टालती रही। तीसरे दिन जब सत्यवान जंगल मंे लकड़ी काटने जा रहे थे, सावित्री भी उनके साथ चली। सत्यवान ने समझाया कि तुम तीन दिन से व्रती हो, तुम न चलो किन्तु वह नहीं मानीं और सत्यवान के साथ वन को चली गयी।
सत्यवान एक पेड़ पर लकड़ी काटने के लिए चढ़ गया। थोड़ी देर में उसने बहुत सी लकड़ी काटकर गिरा दी। सावित्री ने कहा, ''अब लकड़ी बहुत है, उतर आइए।'' सत्यवान पेड़ से उतरा। उसने कहा, ''मेरे सिर मंे चक्कर आ रहा है।'' धीरे-धीरे सिर मंे चक्कर बढ़ने लगा। सत्यवान धीरे-धीरे बेहोश होने लगा और कुछ ही क्षण में उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। यद्यपि सावित्री जानती थी फिर भी जब उसने अपने पति को निष्प्राण देखा, वह विलाप करने लगी। इसी समय उसे ऐसा जान पड़ा कि कोई भयानक किन्तु तेजपूर्ण परछायीं उसके सामने खड़ी है। उसे देखकर सावित्री भयभीत हो गयी। न जाने कहाँ से उसमें बोलने का साहस आ गया। उसने कहा, ''प्रभो, आप कौन हैं ?'' उस छाया ने कहा, ''मैं यमराज हूँ। मुझे लोग धर्मराज भी कहते हैं। मैं तुम्हारे पति के प्राण लेने के लिए आया हूँ।
तुम्हारे पति की आयु पूरी हो गयी। मैं उसके प्राण लेकर जा रहा हूँ।'' इतना कहकर यमराज सत्यवान के प्राण लेकर चलने लगे। सत्यवान का शरीर धरती पर पड़ा रहा। सावित्री भी यमराज के पीछे-पीछे चलने लगी।
थोड़ी देर बाद यमराज ने मुड़कर पीछे देखा तो सावित्री भी चली आ रही है। यमराज ने कहा- ''सावित्री, तुम कहाँ चली आ रही हो ? जिसकी आयु शेष है वह हमारे साथ नहीं आ सकता। लौट जाओ।'' इतना कहकर यमराज आगे बढ़े। कुछ देर बाद यमराज ने फिर मुड़कर देखा तो सावित्री चली आ रही है। यमराज ने कहा, ''तुम क्यों मेरे पीछे आ रही हो ?''सावित्री बोली, ''महाराज, मैं अपने पति को कैसे छोड़ सकती हूँ ?'' यमराज ने कहा, 'जो ईश्वर का नियम है वह नहीं टल सकता। तुम चाहो तो कोई वरदान मुझसे माँग लो। सत्यवान का जीवन छोड़कर और जो माँगना हो माँगो और चली जाओ।'' सावित्री ने बहुत सोचकर कहा, ''मेरे सास और ससुर देखने लगें और उन्हें उनका राज्य मिल जाए।'' यमराज ने कहा, ''ऐसा ही होगा।''
थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा कि सावित्री फिर पीछे-पीछे आ रही है। यमराज ने सावित्री को बहुत समझाया और कहा, ''अच्छा, एक वरदान और माँग लो।'' सावित्री ने कहा, ''मेरे पिता को संतान प्राप्त हो जाएं।'' यमराज ने यह वरदान भी दे दिया और आगे बढ़े। कुछ

दूर जाने पर यह जानने के लिए कि सावित्री गयी, उन्होंने पीछे गर्दन मोड़ी। देखा, सावित्री चली आ रही है। उन्होंने कहा, ''सावित्री! तुम क्यों चली आ रही हो? ऐसा कभी नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति सशरीर मेरे साथ जा सके। इसलिए तुम लौट जाओ।'' सावित्री ने कहा, ''मैं इन्हें छोड़कर नहीं जा सकती, शरीर का त्याग कर सकती हूँ।''

यमराज चकराये कि यह कैसी स्त्री है। इतनी दृढ़। कोई बात ही नहीं मानती। पता नहीं, क्या करना चाहती है? उन्होंने कहा, ''अच्छा, एक वरदान मुझसे और माँग लो और मेरा कहना मानो। भगवान की जो आज्ञा है उसके विरुद्ध लड़ना बेकार है।'' सावित्री ने कहा, ''महाराज, आप यदि वरदान ही देना चाहते हैं तो यह वरदान दीजिए कि मुझे संतान प्राप्त हो जाए।'' यमराज ने कहा, ''ऐसा ही होगा।'' यमराज आगे बढ़े किन्तु कुछ ही दूरी पर उन्हें ऐसा लगा कि वह लौटी नहीं। यमराज को क्रोध आ गया। उन्होंने कहा, 'तुम मेरा कहना नहीं मानती हो।' सावित्री ने कहा, ''धर्मराज! आप मुझे संतान प्राप्ति का आशीर्वाद दे चुके हैं और मेरे पति को अपने साथ लिये जा रहे हैं। यह कैसे संभव है?''

यमराज को अब ध्यान आया। उन्होंने सत्यवान के प्राण छोड़ दिये और सावित्री की दृढ़ता और धर्म की प्रशंसा करते हुए चले गये। इधर सावित्री उस पेड़ के पास पहुँची जहाँ सत्यवान का शरीर पड़ा था।

सावित्री ने अपनी दृढ़ता तथा तपस्या के बल से असम्भव बात सम्भव बना दी। तप और दृढ़ता में इतना बल होता है कि उसके आगे देवताओं को भी झुक जाना होता है। इसी कारण सावित्री हमारे देश की नारियों में सिरमौर हो गयी और आज तक वह हमारा आदर्श बनी है।

अभ्यास प्रश्न-

1. सावित्री कौन थी? उसका विवाह किससे हुआ था?

2. सावित्री के पिता को दुःख क्यों हुआ?

3. सावित्री ने यमराज से कौन-कौन से वर माँगे?

4. सावित्री ने अपने पति को पुनः कैसे प्राप्त किया?

5. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?